विद्याश्रीन्यास
वर्ष २००७ के आयोजन

संगोष्ठी : आज का समय और साहित्य

'विद्याश्री न्यास' द्वारा पंडित जी के जन्म दिवस पर १४ जनवरी २००७ को "आज का समय और साहित्य" विषय पर संगोष्ठी वाराणसी में आयोजित की गयी। गोष्ठी की अध्यक्षता प्रख्यात समालोचक डॉ. बच्चन सिंह ने की तथा गोष्ठी में डॉ. काशी नाथ सिंह, प्रो. चितरंजन मिश्र, डॉ. पी.एन.सिंह, प्रो. अनंत मिश्र, डॉ. श्रीप्रकाश शुक्ल, डॉ. नीरजा माधव, डॉ. सदानन्द साही, डॉ. प्रभाकर मिश्र, डॉ. अरुणेश नीरन, डॉ. जितेन्द्र नाथ मिश्र, डॉ. राम प्रसाद कुशवाहा, डॉ. गया सिंह, डॉ. विश्वनाथ प्रसाद, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय, श्री दीनबन्धु तिवारी, श्री वाचस्पति, डॉ. रामसुधार सिंह, श्री पवन कुमार शास्त्री, श्री श्रीकृष्ण तिवारी, आचार्य पंकज, डॉ. हरिश्चन्द्रमणि त्रिपाठी आदि विद्वानों ने भाग लिया।

गोष्ठी में प्रो. चितरंजन मिश्र ने कहा कि हम अपने समय की विकृतियों को लेकर चिंतित हैं और हमें अपने पर भरोसा भी नहीं रह गया है। ऐसा इसलिये है क्योंकि तकनीकी विकास ने हम लोगों पर जादू-टोना कर दिया है, जिससे हिन्दी साहित्य पर भी कुप्रभाव देखा जा सकता है। डॉ. पी.एन. सिंह ने आज की जटिलताओं, समकालीन साहित्य और पंडित जी की विचारधारा की विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि समग्रता के लिए आज वैदिक एवं गैर-वैदिक परम्पराओं को साथ-साथ समझने की जरूरत है। डॉ. श्रीप्रकाश शुक्ल ने साहित्य और पाठक के बीच बाजार के हस्तक्षेप को रेखांकित किया। डॉ. अशोक सिंह ने कहा कि निर्णय को अपने पक्ष में करने की क्षमता साहित्य में विद्यमान है। डॉ. नीरजा माधव ने पंडित जी के साहित्य और समय संबंधी विचारों की सतत प्रासंगिकता को रेखांतिक किया। डॉ. सदानन्द साही का मत था कि पंडित जी के साहित्य का सही मूल्यांकन नहीं हुआ जिसे होना चाहिये। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय ने समय और साहित्य के परम्पर सम्बन्ध को, परंपरा और युगबोध को तथा प्रेस और मुद्रा के दबाव के प्रभाव को स्पष्ट किया। डॉ. अरुणेश नीरन ने कहा कि समय जितना कठिन होता है, साहित्य उतना ही सशक्त होता है। डॉ. राम प्रकाश कुशवाहा ने समकालीन संकट को समझने तथा उससे जूझने में पंडित जी के लेखन को सहायक बताया। डॉ. पवन कुमार

शास्त्री का विचार था कि साहित्य समय सापेक्ष नहीं होता अपितु शाश्वत होता है। डॉ. गया सिंह ने समय और साहित्य के विविध संदर्भों को रेखांकित किया। प्रो. अनन्त मिश्र ने अपने वक्तव्य में साहित्यकार को सर्वजनीना माना। आचार्य पंकज ने बताया कि पंडित जी का साहित्य परम्परा एवं आधुनिक बोध से सम्पन्न है। डॉ. प्रभाकर मिश्र ने कहा कि साहित्य शाश्वत मूल्यों से अनुप्राणित होता है। अत: समय से आतंकित होकर कालजयी रचना नहीं हो सकती। डॉ. विश्वनाथ प्रसाद ने आचार्य मिश्र के कृतित्व की चर्चा करते हुए आज के समय और साहित्य की चर्चा की। अंत में अध्यक्ष डॉ. बच्चन सिंह ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि आधुनिकता के इस दौर में हिन्दी साहित्य की मूलधारा भटकी नजर आती है। जब तक हम अपने साहित्य की मूल की ओर नहीं ध्यान देंगे तब तक उसका सही स्वरूप प्रस्तुत करना कठिन है क्योंकि साहित्य के माध्यम से ही व्यक्ति की संस्कृति और सभ्यता की पहचान होती है। गोष्ठी का संचालन प्रो. बलराज पाण्डेय ने किया तथा डॉ. हरिश्चन्द्रमणि त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'चिकितुषी' एवं 'कितने मोरचे' का लोकार्पण

इसी अवसर पर विद्याश्री न्यास की सांवत्सर शोध पत्रिका **'चिकितुषी'** तथा पंडित जी के अप्रकाशित लेखों का प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित संग्रह **'कितने मोरचे'** का लोकार्पण प्रख्यात इतिहासविद् डॉ. राय आनंद कृष्ण द्वारा किया गया।

काव्य संध्या

सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय के पूर्व प्रतिकुलपति पं. शिवजी उपाध्याय की अध्यक्षता में दिनांक १४ जनवरी की संध्या को कवि गोष्ठी सम्पन्न हुई, जिसमें डॉ. अनंत मिश्र, डॉ. अशोक सिंह, श्री सोमप्रभु, श्री सलीम बनारसी, श्री राजेश सिंह, आचार्य पंकज, श्री प्रवीण तिवारी, डॉ. रीता कुमार, डॉ. अरुणेश नीरन, श्री श्रीकांत दुबे, सुश्री मंजुला चतुर्वेदी, श्री कुमार हेमंत, डॉ. विश्वनाथ प्रसाद, श्री ब्रजेश मिश्र, श्री प्रकाश उदय, श्री अशोक कुमार सिंह, श्री रवीन्द्र कौशिक, श्री हरिराम द्विवेदी, श्री राम अवतार पाण्डेय आदि ने काव्य पाठ किया।

लोक कवि का सम्मान

काव्य संध्या के साथ ही लोक कवियों के सम्मान की परम्परा में न्यास की तरफ से वयोवृद्ध कवि पं. चन्द्रशेखर मिश्र को सम्मानित किया गया।

संस्कृत कवि समवाय

पं. विद्यानिवास मिश्र की पुण्य तिथि पर १४ फरवरी २००७ को एक संस्कृत की समवाय का आयोजन आचार्य रेवा प्रसाद द्विवेदी की अध्यक्षता में किया गया जिसमें

प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी, रमाशंकर मिश्र, डॉ. राजाराम शुक्ल, डॉ. मनुदेव भट्टाचार्य, श्री हरि प्रसाद अधिकारी, पं. वायुनन्दन पाण्डेय व डॉ. हरिश्चन्द्रमणि त्रिपाठी आदि कवियों ने काव्य पाठ किया।

व्याख्यान

दिनांक ८-९ मार्च, २००७ को पं. विद्यानिवास मिश्र **स्मृति व्याख्यान माला** की श्रृंखला में दूसरा व्याख्यान प्रख्यात हिन्दी कवि तथा कला मर्मज्ञ **श्री अशोक बाजपेयी** द्वारा शोध ब्रज साहित्य अकादमी, वृन्दावन के सभागार में **''समकालीन कविता''** विषय पर दिया गया इनके सत्रों में विश्वकविता, भारतीय कविता तथा हिन्दी कविता का विवेचन किया गया। सत्रों की अध्यक्षता श्री भवानीशंकर शुक्ल तथा आचार्य श्रीवत्सगोस्वामी द्वारा किया गया।

प्रकाशन

अप्रकाशित रचनाओं के प्रकाशन की श्रृंखला में इन दोनों निबन्ध संग्रहों **''साहित्य का सरोकार''** तथा **''कितने मोर्चे''** का प्रकाशन हुआ। इनका सम्पादन डॉ. गिरीश्वर मिश्र द्वारा किया गया।

पं० विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यानमाला के अन्तर्गत **डॉ० गोविन्द चन्द्र पाण्डेय** द्वारा किया गया प्रथम व्याख्यान **''सम सामयिक भारतीय संस्कृति''** पुस्तक के रूप में राका प्रकाशन, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित कराया गया।